आपातकाल में सृजन फुलवारी

ब्रजेश शर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

ब्रजेश शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-132-9
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 **ब्रजेश शर्मा**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY BRAJESH SHARMA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	अभी कल ही की बात है	6
2.	बहुत दिन हुए	7
3.	आँखों में लिये अश्क	8
4.	कैसा हूँ मैं	9
5.	तुझसे नाराज़ नहीं	10
6.	वो एक भूला सा नाम	11
7.	कौन हो तुम?	12
8.	कब तलक	13
9.	हर राह बदल जायेगी	14
10.	न जाने कितने?	15
11.	ये तो बतायें हैं कहाँ आप?	16
12.	कहाँ नहीं हूँ मैं?	17
13.	ओ! भगवान	18
14.	युग प्रतीक्षा	19
15.	आ जाय	20
16.	दोस्ती निभाता हूँ	21

अभी कल ही की बात है

कोई आहट अब तेरे दर पर भी हो तो,
चौंकाती नहीं तुझे,
मेरी आमद का शिद्दत से होता था इंतज़ार,
अभी कल ही की बात है!
कहाँ से सीख ली मेरे महबूब ने,
बातें बनाने की अदा,
मेरे नाम से भी लरजते थे लब उसके
अभी कल ही की बात है!
कैसा ख़ूबसूरत ख़्वाब है,
अपनी सी लगने लगी है ज़िन्दगी,
मेरी सूरत से भी बेज़ार, आते थे नज़र वो,
अभी कल ही की बात है!
रौशनी के मरक़ज़ अब,
करते हैं तामीर अँधेरों की,
खिला करते थे कमल कीचड़ में
अभी कल ही की बात है!
और जब दर्द की दहलीज से
हर साँस, हर रिश्ता, हर लम्हा,
हर ख़्वाब गुज़र जाता है,
और दामन में चंद दाग़ों के सिवा
जब हासिल नहीं होता कुछ,
रह जाते हैं शेष, अशेष नेह,
अभी कल ही की बात थी।

बहुत दिन हुए

बहुत दिन हुए,
तेरी मुस्कान के लम्हे
मेरे ख्वाबों में भी नहीं
बीत जातें दिन तेरी याद में,
सोचते हुए तुझको
रात आती है तो,
पलकों पे ठहर जाती है
बड़ी दूर तक, पीछा करते हैं मेरा,
तेरी गर्म साँसों के साये
और दूर बहुत दूर, देर तलक,
चलता रहता है सफ़र मेरा
खोल देता हूँ मैं,
अपने ख्वाबों के परिंदों के पंख
तो सुरमई घटाओं सी,
तेरी जुल्फों का स्पर्श,
बढ़ा देता है बेकरारियाँ मेरी,
मेरी कोमल हथेलियों से
कुछ कहते हैं तेरे मरमरी हाथ,
पर मेरी थकी आँखें, प्यासे लब,
चाहते हैं महसूस करना, उन्हें अपने पास,
करीब बेहद करीब, देह में प्राण सा

आँखों में लिये अश्क

आँखों में लिये अश्क
उस मुस्कुराती सूरत ने
कभी कुछ जताया ही नहीं
मैंने मुहब्बत भी की उससे
और ये सच ज़माने से छिपाया भी नहीं
मेरी ही कहानी वो मुझे
बड़े शौक से सुना गया,
मेरे ज़ख्म, उससे ही वाबस्ता हैं
कभी मैंने उसे बताया भी नहीं
जाने क्यूँ मेरी सूरत से ही
सहम जाते हैं परिंदे
मेरे हाथों ने फूलों के सिवा
कभी कोई संग उठाया ही नहीं,
अपनी खुशियों के लिए
बेवफ़ाई से जुदा
कोई और इल्ज़ाम तराश
मेरे दिल, मेरी रूह, मेरी साँसों में,
कोई और समाया ही नहीं
तुझसे यूँ तो वफ़ा का कोई,
वादा नहीं था मगर,
कोई और शख़्स, इस जहान में
इतनी शिद्‌दत से, भाया भी नहीं!

कैसा हूँ मैं

कैसा हूँ मैं
कुछ तन्हा, कुछ उदास सा,
कभी बारिश में,
भीगी ज़मीं सा तृप्त,
कभी सहरा की,
अनबुझ प्यास सा
कभी खुद ही में, मैं गुम कहीं
कभी तुझमें, खुद की तलाश सा
कभी ख़ारों में उलझे, दामन सा तो,
कभी गुलमोहर की सुर्ख आग सा
बस कुछ इसी तरह तन्हा तन्हा,
खुद में समेटे तमाम दर्द,
कभी अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर तलाशता,
मेरा मौन और मैं,
और वो हैरत है,
मैंने ही सिखाया था जिसे तीर चलाना,
अब मेरे सिवा उसका,
निशाना भी नहीं है कोई

तुझसे नाराज़ नहीं

तुझसे नाराज़ नहीं,
खुद से ही कुछ, ख़फ़ा ख़फ़ा सा हूँ
आईने में मेरा, अक्स नहीं कोई,
धुआँ धुआँ सा हूँ
हर वक्त की तेरी मसरूफ़ियत,
चुभती है मुझे, काँटों की तरह
ओढ़ कर दर्द कोई
पिघलता है मेरा वजूद
कि मैं किसी शमा सा हूँ
कितने मिलते जुलते हैं, आदतों से मेरी,
तेरे मन के भरम
चल कोई और नाम दे मुझे
कि मैं बचपन से ही बेवफ़ा सा हूँ
न कोई शिकवा न गिला,
है मेरी रानाइयों को
तुझसे मुहब्बत में
कि मैं अपनी जात में,
औरों से कुछ जुदा जुदा सा हूँ
बेमौसम अश्कों की बारिश में
भरते नहीं हसरतों के जख़्म
कभी ख्वाबों में ही सही सीने से लगा कि
मैं किसी दवा सा हूँ

वो एक भूला सा नाम

वो एक भूला सा नाम
जब भी मेरे जहन में उभर आता है,
कोई संदली एहसास मेरी साँसों में बिखर जाता है,
तराश लेता हूँ मैं खुद ही कोई जख़्म नया,
जब भी कोई घाव पुराना,
भरता सा नज़र आता है
लाख टूटा हूँ मगर,
कुछ ख़्वाब अब भी मुझमें जिन्दा हैं,
ये भी उतना ही सच है कि
चढ़ा दरिया इक रोज़ उतर जाता है
कभी रहजन, कभी रहबर,
कभी राहि, कभी सितमगर,
मेरे मौला! क्या शख़्स है वो?
ख़ुदा जिसमें नज़र आता है
मेरी गुस्ताख़ियों को,
मेरी मुहब्बत की एक अदा समझ,
कभी कभी सच वो नहीं होता
जो आँखों को नज़र आता है
रखता है मेरे होठों पर उसका नाम,
किसी दुआ का सा असर,
ख़यालों में उभरता है, माँ का अक्स
और, ब्रजेश सज़दे में नज़र आता है

कौन हो तुम?

क्या रिश्ता है मेरा तुम्हारा?
उगता हुआ सूरज और तुम
डूबता हुआ सूरज और मैं
अजीब सामंजस्य है न,
डूबते और उगते सूरज में
ठीक उसी तरह जैसे तुममें और मुझमें
तुम्हारा प्रकाश आलोकित करेगा
अखिल विश्व को
और मैं अंधकार की गोद में हो जाऊंगा विलीन
सम्पूर्ण अस्तित्व को समेट कर
और जैसा कि मैं अक्सर कहता आया हूँ
निर्वाण प्राप्ति हम दोनों में से
किसी के लिए भी सर्वथा असम्भव है
क्यूँकि कुछ समय बाद
तुम मेरा और मैं तुम्हारा रूप धारण कर लेंगे
बस यही एक रिश्ता है
मेरे और तुम्हारे मध्य
आदिकाल से ऐसा ही होता रहा है
अनंतकाल तक यही होता रहेगा
मैं, तुम और सूरज
तुम, मैं और सूरज

कब तलक

मुस्कुराते फूलों की चमक
माना कल कहीं खो जायेगी
ग़म नहीं कर खुशबू उनकी
फिर भी साँसों को महकायेगी

टूट कर चाहा था जिसको
आज उसने ही दीवाना कहा
किसको पता था बन्दा परवर
ज़िन्दगी ही यूँ छल जायेगी

कुछ हसरतों की चिंगारियां
आगोश में लाया हूँ मैं
रफ्ता रफ्ता जज़्बातों पर जमी
बर्फ़ भी पिघल जायेगी

लाख उदासियों के मौसम हों
कुछ रंगों को फिर से खिलना है
रात जितनी भी लम्बी काली हो मगर
किसी लम्हे ढल जायेगी

मैं तो पूछ लेता हूँ हर शब
खुद से ही खुद का हाल भी
देखें भला अब कब तलक
ये बन्दगी चल पायेगी?

हर राह बदल जायेगी

हम बदल जायेंगे, तुम बदल जाओगे
चलते चलते हर राह बदल जायेगी
महफ़ूज़ रखना यादों के चिरागों को
हर राह पहले सी ही निकल आयेगी
बनना, बिगड़ना, सँवरना, उलझना
रीत है मुकद्दर की
चाहोगे तो बिन लकीरों के ही
तकदीर सँवर जायेगी
उसने तो कह दिया था अपने
दिल का सब हाल मगर,
अब मेरे लब हिलेंगे तो वो
कुछ और सिमट जायेगी
उसकी नम आँखों ने मुझे
ये सोचने पे मजबूर किया
गोया एक खुशबू है वो,
छेड़ूँगा तो हवाओं में बिखर जायेगी
चली आओगी अगर फिर से
हाथों में लिये पीले गुलाब
तेरे हाथों की हिना कुछ और निखर जायेगी!
न जाने कितने सफ़ीने डूब जाते हैं
किनारों पे आ के!

न जाने कितने?

बेरहम हवाएँ बेवक्त
बुझा देतीं हैं चिराग़, न जाने कितने?
गौर से मुझको नहीं
मेरे आईने की शक्ल देख
मुझपे तो चढ़े है मुलम्मे अभी,न जाने कितने?
यकीनन
तेरे दिल की भी सुनूँगा,
मैं किसी रोज़ मगर
दाग़-ए-दिल खुद के
मिटाने हैं अभी मुझको, न जाने कितने?
मुहब्बत का सिला हरदम
तन्हाइयाँ ही हों
जरूरी तो नहीं
लोग अफ़साने
बना देते हैं बातों के, न जाने कितने?
बू-ए-गुल हवा के
रहमो करम पे ही हो
ऐसा कहाँ होता है,
रौनके बज़्म हुए हैं
तेरे चर्चे भी न जाने कितने?

ये तो बतायें हैं कहाँ आप?

तू ही बता ऐ दोस्त कहाँ नहीं हूँ मैं
तेरे दिल, तेरी धड़कन, तेरी रग ए जाँ में
तेरे इर्द गिर्द डोलती संदली हवा में
तेरी नींदों में, तेरे ख्वाबों में,
तेरी सहर, तेरी शाम, तेरी रातों में
तेरी देह के गूँजते काम राग में,
झील की चाँदनी
और शिखरों पर पिघलती
बर्फ की आग में
तेरी हसरतों में, कामनाओं में
तेरी कोमलतम भावनाओं में
तेरी संग्रहीत वेदनाओं में
तेरी विनिर्दिष्ट वर्जनाओं में
तेरी फुर्सत और गहनतम व्यस्तताओं में,
तेरे अश्कों और तमाम दुश्चिंताओं में,
तेरी मुस्कान की अभिव्यंजनाओं में,
तेरे मुखर आह्वान में, तेरे मूक प्रस्थान में
विगलित मन के आख्यान में
इंगितों के व्याख्यान में
तेरे ख़ामोश लबों के स्पन्दन में,
थरथराते चेहरे के क्रन्दन में
तेरे विश्वास के अटूट बंधन में, तू ही बता ऐ दोस्त!

कहाँ नहीं हूँ मैं?

अपने में, अपने होने की सार्थकता तलाश करता
तुझमें ही निहाँ हूँ मैं!
तेरी इबादतों में भी तो कुछ धुँधले ही सही
मगर मेरे साये हैं! द्वार मेरे आओ तो
तोड़कर सब वर्जनाएं, द्वार मेरे आओ तो,....!
प्यास अधरों से चली तो,
मन पे आकर थम गयी है,
वो नमी जो नींव में थी,
वाष्प होकर उड़ गयी है,
ओ! पुराने श्याम घन फिर, आ मुझे दुलराओ तो।
तोड़कर सब वर्जनाएं, द्वार मेरे आओ तो,....!
साँस की कारा पे जब,
पहरे दिए हैं ख्वाहिशों ने,
मन का हर सूना नगर भी,
लूटा है आराइशों ने,
गर्दिशों में आस का फिर, एक दीप जलाओ तो।
तोड़कर सब वर्जनाएं, द्वार मेरे आओ तो,....!
आस्था के होश हैं गुम,
किसको समर्पण की पड़ी,
जकड़ी हुई संवेदना में,
संत्रास की ये कु-घड़ी,
इक तरी सम्भावना की, तट तलक भी लाओ तो।
तोड़कर सब वर्जनाएं, द्वार मेरे आओ तो.....!

ओ! भगवान

चल पड़ती हैं,
छेनी और हथौड़ी,
थामे मेरी अंगुलियाँ
उस अनगढ़ पत्थर की
बाहरी परत को छीलते हुए,
पूछा था गुरूजी ने,
जैसा कि तुम कहते आ रहे
ये तुम्हारा अब तक का
सबसे हसीन शाहकार होगा?
पहले वेंकटेश की
शक़्ल उकेरता हूँ तो,
बन जाता है माँ का चेहरा,
और माँ की अंतिम मुस्कान तो,
सुरक्षित थी किसी और के हाथों में,
चेहरे में,
और मैं अनजाने ही,
तराश लेता हूँ तुम्हें
एक डॉ. की शक़्ल में,
ओ! भगवान,..!

युग प्रतीक्षा

तुम मिले तो खुशियाँ आल्हादित हुईं।
वेदनाऐं मन से निर्वासित हुईं।

प्रेम है तुमने कहा धीमे से जब,
मंदिरों की घण्टियाँ गुंजित हुईं।

स्वप्न इक अँगड़ाई लेकर उठ गए,
धड़कनें सन्दल से ज्यूँ सुरभित हुईं।

जब किसी मुस्कान ने तुमको छुआ,
कुछ ऋचाऐं गीत में अनुदित हुईं।

गौरवर्णी भाल पर टीका सजा,
तब प्रिया भी चंद्र सी भासित हुईं।

हर दिशा संगीत बिखरा हास का,
पीर मन की ख़ूब आनन्दित हुईं।

युग प्रतीक्षा का फलन तुम, और ज्यूँ,
कामनाऐं दैव की इंगित हुईं।

आ जाये

फ़िज़ा में जह्र है ताज़ा बयार आ जाये,
यूँ गुलशनों को भी थोड़ा क़रार आ जाये

दिलो दिमाग में तुम सादगी को रख लो तो
तुम्हारे हुस्न पे पल में निखार आ जाये

किताबें, गुड़िया दिला दूँ मैं अपने बच्चों को
अगर समय पे जो अबके पगार आ जाये

मैं जीत जाऊँ ज़माने से जंग गर मुझ पे,
किसी घड़ी जो तुम्हे एतबार आ जाये

दरकती नींव को खुद ही मलाल होगा अगर,
किसी फ़सील पे कोई दरार आ जाये

हुज़ूर सर पे उठा लेते हैं जहां सारा,
अगर ज़रा सा भी उनको बुखार आ जाये

है प्यास मेरी अधूरी ब्रजेश जन्मों से,
जो एक पल को मिलो तुम क़रार आ जाये।

दोस्ती निभाता हूँ

दर पे उसके मैं रोज़ जाता हूँ,
इस तरह दोस्ती निभाता हूँ
कोई सागर नहीं, न पैमाना,
जिसकी आँखों में डूब जाता हूँ।
जो हँसी का सबब है मेरे लिए,
मैं उसे बेसबब रुलाता हूँ।
दर्द अपने बयाँ करो कुछ तुम,
मैं तुम्हें ज़ख्म कुछ दिखाता हूँ।
कुछ पुराने सफ़र तमाम हुए,
दास्ताँ अब नयी सुनाता हूँ।
हाथ रस्मन मिला लो तुम,
पर मैं, रूह से निस्बतें निभाता हूँ।
कौल तुमसे है मेरा होली में,
नफ़रतें, द्वेष सब जलाता हूँ।
एक नाबीना गूँगी बहरी शय,
किस्सए ग़म जिसे सुनाता हूँ।
हर घड़ी ज़ीस्त तौलती है मुझे,
और मैं उसको आज़माता हूँ।
ज़ख्म हैं दिल पे और घायल रूह,
गीत खुशियों के पर मैं गाता हूँ।
रूखी सूखी है पास जो मेरे,
बाँट कर सबके साथ खाता हूँ।
ज़िन्दगी एक ग़म का दरिया सा,
खुद को डूबा हुआ मैं पाता हूँ।
माँ इबादत मेरी, मेरी पूजा,
शीश चरणों में मैं नवाता हूँ।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

ब्रजेश शर्मा

झांसी(म.प्र.)

E-mail - braj.vifal4@gmail.com

Mobile - 9305101442

मानव मन अपने आंतरिक भाव, व्यथाएँ, उत्कंठा, संवेदना, हँसी-खुशी, क्रियात्मकता जिस गतिविधि के तहत, अभिव्यक्त करता है वो सृजनात्मकता है। जो तमाम कलाओं के माध्यम से, उसके व्यक्तित्व का प्रस्फुटन है। जो अपने सूक्ष्मतम रूप में संगीत में परिणति पाती है, और स्थूल रूप में वास्तु कला में।

इन्ही सबके बीच डोलती है, काव्य सृजन की अति विशिष्ट खुशबू, जो अपने साथ साथ दूसरों को भी आप्लावित करती है।

इस वैश्विक आपदा की, आपात स्थिति में अन्तरा शब्दशक्ति जो योजना लेकर आया है, वो एक महती भूमिका निभा रही है। हमारे अवसाद को दूर कर एक उत्फुल्लता के साथ, विपरीत परिस्थितियों से दो-दो हाथ करने का आव्हान हो जैसे। कार्यक्रम की नित्य रूपरेखा का निर्धारण हो या आपातकालीन सृजन की ये विशेष शृंखला, हमारे इफरात में उपलब्ध समय का सदुपयोग ही है।

डॉ प्रीति सुराना को इस नूतन आयोजन के लिए कोटि-कोटि साधुवाद एवं शुभकामनाएं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट(म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-132-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/